Banaas Jan 39 - Read-only

Read Only - You can't save changes to t...

अनुक्रम

		4
परिवार, समाज और राजसत्ता	*प्रगति मिश्रा*	5
तंत्रता आंदोलन और नवजागरण से संवाद	*आशीष त्रिपाठी*	17
: इतिहास का परिप्रेक्ष्य	*मानवेन्द्र प्रताप सिंह*	34
पढ़त की जरूरत	*बसंत त्रिपाठी*	41
वेश का चारु चंद्रलेख	*योगेश तिवारी*	45
और पसमांदा मुस्लिम समाज	*राहुल कुमार यादव*	58
जनतंत्र के तमाशे का आख्यान	*बिमलेंदु तीर्थंकर*	67
सलीका चाहिए आवारगी में	*वंदना चौबे*	73
एक नजर यह भी	*रेणु व्यास*	95
दलित आत्मकथा की शिखर उपलब्धि : जूठन	*नामदेव*	100
असहमति का विवेक और प्रतिरोध का साहस	*राम विनय शर्मा*	106
परंपरागत मंत्र के विरुद्ध एक मंत्र	*रचना सिंह*	114
काव्य-संरचना में अंतराल के होने के निहितार्थ	*संजय कुमार*	118
'तिरिछ' कहानी और गांधी का स्वप्न	*साहिल कैरो*	125

Banaas Jan 39 - Read-only

Read Only - You can't save changes to t...

: प्रो. नवलकिशोर
प्रो. काशीनाथ सिंह
डॉ. के. सी. शर्मा
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
प्रो. माधव हाड़ा

: पल्लव

: गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

-चित्र : सुनील निमावत, उदयपुर

क्ष : मयंक शर्मा, उदयपुर

इप सेटिंग : सुभाष कश्यप, दिल्ली मो. : +91-9911163286

राशि : 25 रुपए (यह अंक)-डाक द्वारा मंगवाने पर-50 रुपये
50 रुपये (संस्थागत)-डाक द्वारा मंगवाने पर-75 रुपये
300 रुपये-वार्षिक सहयोग (व्यक्तिगत)
600 रुपये-वार्षिक सहयोग (संस्थागत)
5000 रुपये-आजीवन (व्यक्तिगत)
8000 रुपये-आजीवन (संस्थागत)
The Draft/Cheque may please be made in favour of 'Banaas Jan'
OurA /C Details : SBI C/A No.61159024776
IFSC Code : SBIN0032036
Branch name : State Bank of India, D L DA V Model School, BN Block
Shalimar Bagh, New Delhi-110088

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
व्हाट्सअप : +91-8130072004 (केवल संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और दिव्या आफसेट प्रिन्टर्स, बी-1422, न्यू अशोक नगर, मयूर विहार, दिल्ली-110096 से मुद्रित।

BA NAA S JA N
A Collection of Literature
Language : Hindi

ISSN 2231-6558

Banaas Jan 39 - Read-only

Read Only - You can't save changes to t...

नामदेव

दलित आत्मकथा की शिखर उपलब्धि : जूठन

दलित आत्मकथाएँ सिर्फ एक रचना मात्र नहीं है बल्कि वे दलित समाज की सामाजिक स्थिति का जीवंत आईना हैं जिसमें पनघट, कुएँ, मंदिर जैसी सार्वभौमिक स्थलों और शिक्षा तथा जीवनयापन के मानवाधिकारों से वंचित दलित मनुष्य की संघर्ष गाथा को प्रस्तुत करने के साथ दलित जीवन के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को भी दर्शाना दलित लेखन की मुख्य विशेषता है। स्वतंत्रता के बाद का दलित लेखन सर्वदृष्टि संपन्न हुआ है। उसकी अनुभूति और रचनाधर्मिता का दायरा निरंतर विकसित हुआ है। राजनीति, संस्कृति, जातिवाद, शोषण, अन्याय, अमानवीयता का पर्दाफाश करने में दलित साहित्य का जवाब नहीं। सबसे बड़ी बात दलित साहित्य जीतिविहीन और शोषणमुक्त समाज की वकालत करता है। और दलित आत्मकथ्ज्ञा, दलितों के सच को प्रामाणिकता में चित्रित करने वाला सर्वाधिक साहित्यिक विधा के रूप में उभरा है और उसकी अपार लोकप्रियता का कारण भी है।

अपने भोगे हुए जीवन को सच्चाई के साथ शब्दबद्ध कर देना ही 'आत्मकथा' है। 'आत्मकथा' शब्द (ऑटोबायोग्राफी) का पहला प्रयोग सन् 1796 में जर्मनी में हैंरिच हर्डर ने किया था। इसके बाद ब्रिटेन कि रॉबर्टों ने इसका इस्तेमाल सन् 1804 में किया, और इस तरह 18वीं सदी के अंत और 19वीं सदी के शुरुआती दौर में यह शब्द प्रचलित हाकर 'आत्मकथा साहित्य' को सृजित करने लगा जिससे हिंदी साहित्य जगत में अछूता न रहा। हिंदी में कई बेतरह आत्मकथाएँ लिखी गईं। वास्तव में पश्चिम से आई यह साहित्य रूप हिंदी के लिए नई और प्रेरक थी। लेकिन चुनौती भरा था, क्योंकि आत्मकथा में सच ही बयान करना होता है। परंतु हिंदी दलित साहित्य ने सच की राह पर चलते हुए, चार कदम आगे बढकर 'आत्मकथाओं' के माध्यम से अपने जीवनगाथा को महावृत्तांत का रूप दे दिया। आज स्थिति यह है कि दलित साहित्य का पहचान के पीछे आत्मकथाएँ मुख्य आधार के रूप में चिह्नित हो रही है।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि डॉ. बी.आर. अंबेडकर की प्रेरणा से ही मराठी, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में आधुनिक दलित साहित्य का विकास हुआ है। मराठी में दया पवार की आत्मकथा 'बलूत' (अछूत, 1979) दलित साहित्य की पहली कृति है जिसमें सामंती सामाजिक परिवेश से प्रभावित दैन्यतापूर्ण दलित जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है। प्रो. सोनकांढाले, आठवाणीचौ पक्षी (यादों के पंछी), माधव कोडविलकर ने 'अन्त्यंज' आत्मकथा लिखकर चमार लोगों में अंबेडकरवादी विचारों का प्रचार किया। सन् 1980 में घूमंतू समाज के लक्ष्मण माने की आत्मकथा 'उपरा' (पराया) प्रकाशित हुई जिसमें खानाबदोश समुदाय के लोगों का त्रासदीय जीवन अंकन हुआ है।

सन् 1982 में प्रकाशित नाना साहेब झोडगी की 'फांजर' और डॉ. मल्हारी मोरे की 'गबाल' नामक आत्मकथाएँ महत्त्वपूर्ण हैं। इनमें 'घुमंतू जाति', 'पिंगला जोशी' जाति-समूह की अपरिचित दुनिया का चित्रण किया गया है। सन् 1991 में प्रकाशित शरणकुमार लिंबाले की आत्मकथा 'अक्करमाशी' ने मराठी दलित आत्मकथा के साहित्यिक इतिहास में ही नहीं, विश्व भर की आत्मकथाओं के इतिहास में अपना नाम दर्ज करवा लिया। मराठी दलित आत्मकथाओं के इसी क्रमीक विकास में आगे भी कई नाम

नामदेव : सुपरिचित आलोचक। अनेक पुस्तकें।
हिंदी विभाग, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007
मो. : 91-9810526252 ईमेल : namdevkmc_7@rediffmail.com